बुध-धम्म के उत्थान में बिहार की महान् भिक्खुनियों एवं उपासिकाओं का योगदान।
(Contribution of Eminent Bhikkhunis and Upasikas of Bihar in the Rise of Buddhism)

धीरज कु. निर्भय 'दसानन',
बौद्ध-अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
Email: dhiraj.nirbhay@gmail.com

Abstract

This research paper delves into the influential role played by the women of Bihar - specifically bhikkhunis (ordained nuns) and upasikas (lay female followers) - in the development and propagation of Buddhism during and after the time of the Buddha. It provides a socio-historical analysis of how these women overcame deep-rooted patriarchal norms to become pivotal figures in religious reform and spiritual leadership.

The study foregrounds the active involvement of notable female figures such as Mahapajapati Gotami, Khema, Patacara, Dhammadinna, Bhadda Kundalakesa, and Visakha, among others. Drawing on canonical sources like the Therigatha and Jataka Tales, the paper chronicles their personal transformations - from royal consorts, aristocrats, and courtesans to enlightened bhikkhunis - revealing how each woman's spiritual journey became a testimony to inner resilience and dharmic conviction.

Through these biographies, the paper highlights themes of gender equality, renunciation, spiritual discipline, and the struggle against societal injustices. It also underscores Bihar's historical significance as a cradle of early Buddhist education, monastic culture, and women's emancipation within the Buddhist sangha.

A significant part of the study is devoted to Sanghamitta's mission to Sri Lanka, where she established a bhikkhuni sangha, emphasizing the transnational impact of Bihar's Buddhist women. The author argues that this legacy of inclusion and spiritual contribution laid the foundation for a more egalitarian vision of society.

सारांश:

यह शोध-पत्र बिहार-प्रदेश की महान् भिक्खुनियों एवं उपासिकाओं के माध्यम से बुध-धम्म के उत्थान में स्त्रियों के अद्वितीय योगदान का पुनर्मूल्यांकन करता है। ऐतिहासिक-सामाजिक विश्लेषण द्वारा यह दिखाता है कि महापजापती गोतमी, खेमा, पटाचारा, धम्मदिन्ना, विसाखा, अम्बपाली आदि स्त्रियों ने न केवल भिक्खुनी-संघ की स्थापना और विस्तार में अग्रणी भूमिका निभाई, बल्कि दान, शिक्षण, व्यवस्थापन और धम्म-प्रचार के माध्यम से बौद्ध समुदाय की आधारशिला मज़बूत की। थेरीगाथा और जातक-कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन उजागर करता है कि तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज में भी इन नारियों ने आध्यात्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और आर्थिक सहयोग के माध्यम से बुध-धम्म को जन-जन तक पहुँचाया। शोध निष्कर्षत: स्पष्ट करता है कि बिहार की स्त्रियाँ नारी-सम्मान, शिक्षा व करुणा पर आधारित बौद्ध सांस्कृतिक परम्परा की संवाहक रहीं और भिक्खुनी-संघ वैश्विक स्त्री-समाज को बौद्ध धर्म की अमूल्य देन है।

मुख्य शब्द: अछूत, अर्हत्व, इतिहास, थेरीगाथा, देवदासी-प्रथा, बिहार, बुध-धम्म, भिक्खुनी-संघ, संस्कृति, सतीप्रथा

परिचय

महाकारुणिक बुध की प्रमुख महिला शिष्याएं-

महामानव बुध ने महिलाओं को नाम प्रदान किए, दोनों भिक्खुनी और उपासिका, जो पवित्रता और सदाचारी जीवन के उदाहरण थे। ये क्रमशः अंगुत्तर निकाय के पंचम-वग्गा और षष्ठ-वग्गा में सूचीबद्ध हैं; -
वरिष्ठता में सबसे आगे: महापजापती गोतमी
महान् ज्ञान में सबसे आगे: खेमा

मानसिक शक्ति में सबसे आगे: उप्पलवण्णा
विनय कण्ठस्थ करने में सबसे आगे: पटाचारा
धम्म बोलने में सबसे आगे: धम्मदिन्ना
अवशोषण में सबसे आगे: सुंदरी नंदा
ऊर्जा में सबसे आगे: सोना
पेशनीगोई में सबसे आगे: सकुला
तीव्र अंतर्दृष्टि में सबसे आगे: भद्दा कुण्डलकेसा
पिछले जन्मों को याद करने में सबसे आगे: भद्दा कपिलानी
महान् अंतर्दृष्टि में सबसे आगे: भद्दा कच्चना
मोटे वस्त्र धारण करने में अग्रणी: किसागोतमी
आस्था में सबसे आगे: सिंघालकामाता

उपासिकाओं (गृहणियों) में अग्रणी: -
शरण के लिए पहली बार जाने में सबसे आगे: सुजाता सेनयाधिता
दाता के रूप में अग्रणी: विसाखा
विद्या में अग्रणीः खुज्जुत्तरा
सबसे पहले जो मेत्ता में रहती है: सामवती
अवशोषण में सबसे आगे: उत्तरानंदमाता
उत्तम वस्तुएँ देने में सबसे आगे: सुप्पवास कोलियधिता
बीमारों की देखभाल में सबसे आगे: सुपिया
अनुभवात्मक विश्वास में अग्रणी: कात्यायनी
विश्वसनीयता में सबसे आगे: नकुलमाता
मौखिक प्रसारण के आधार पर विश्वास में सबसे आगे: कुरारघरा की काज़ी

शोध-प्रविधि - ऐतिहासिक सन्दर्भ में बिहार और बुध-भिक्खुनी संघ का सामाजिक अन्वेषण।

विषय-प्रवेश

भगवान् बुध के जीवन-काल में बिहार में बुध-धम्म के अनुयायी पुरुषों के उल्लेख सैकड़ों प्राचीनतम ग्रंथों व पुरातात्विक अवशेषों में प्राप्त होते हैं। वहीं बुध-पुत्तियों के उल्लेख भी दर्जनों प्राचीन ग्रंथों व सैकड़ों पुरातात्विक अवशेषों से स्पष्ट होते हैं। इसलिए बुध-धम्म के उत्थान व प्रसार में बिहार-प्रदेश की नारियों के सहयोग की चर्चा हमने यहाँ करने का प्रयास किया है। उस समय भारतीय समाज में नारियों की स्थिति क्या थी, इस ओर जब हम अच्छी तरह ध्यान देते हैं, तब हम देखते हैं कि नारियों ने बुध-धम्म के विकास में जितनी भी सहायता पहुँचाई, वह तात्कालीन भिक्खु-संघ और सामाजिक पुरुषों से बिल्कुल भी कमतर नहीं मानी जा सकती। पूर्णतया छान-बीन करने पर हम देखेंगे कि बुध-काल से पहले साधारण जन नारी की समाज में बहुत उन्नत अवस्था नहीं थी। सामाजिक रूप में सामान्य जन की स्थिति दासता और सेवा-वृत्ति में हम पाते हैं, उसी तरह नारी की स्थिति भी गृह-प्रबन्ध और पतिसेवा में ही विशेष रूप से देखते हैं।

अन्य सम्पत्तियों की तरह कन्या भी बेची और खरीदी जा सकती थी। बाँझ होने पर अथवा सन्तानवती होने के बाद भी बाँझ हो जाने पर, उसे पति त्याग सकता था। यदि किसी पुरुष के पुत्र हो, तो उसकी सम्पत्ति उसकी पत्नी को न मिलकर पुत्र को ही मिलती थी। इतना ही नहीं, उसके पुत्र के बाद भी उसके पौत्र को ही मिलती थी, पर उस बूढ़ी दादी का सम्पत्ति पर कतई अधिकार नहीं था। इस तरह की अनेक बातों से नारी-समाज की स्थिति का पता हमें चलता है, जो बुध-काल या उससे पूर्व के काल का है।

बुध-कालीन नारी-समाज की कुछेक स्थिति का पता तो बुध 'जातक-कथाओं' में भी मिलता है। जातक-कथाओं का निर्माण-काल भी तथागत बुध के समय से मौर्यकाल तक का हो सकता है; क्योंकि जातक की कहानियों के आधार पर बने चित्र हमें भरहुत, साँची

और बोधगया की वेष्टन-वेदिकाओं की दीवारों पर उत्कीर्ण मिलते हैं, जिनका निर्माण सुंग-काल में हुआ था। इससे सिद्ध है कि सुंग-काल में जातक-कथाओं की प्रसिद्धि समाज में पूर्णतया हो गई थी, जिसके कारण उनके चित्र भी बनने लग गये थे। जातक-कथाओं में वे ही कहानियाँ, किवदन्तियाँ तथा ऐतिहासिक घटनाएँ वर्णित हैं, जो बुध-पूर्व की अथवा बुध-कालीन थीं। इनमें बुध-कालीन घटनाओं के साथ समाज में प्रचलित पुरानी कहानियों का मिलान किया गया है। अतः, जातकों में वर्णित नारी-समाज की अवस्था बुध-पूर्व की या बुध के समय की ही हैं, जिससे स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर विशद प्रकाश पड़ता है। जातक-कथाओं की संख्या 120, 145, 167, 193, 199, 212, 262, 263, 274 इनमें कथाओं के द्वारा नारी सम्बन्धी उक्त विशेषणों को सार्थक कर दिखाने का प्रयत्न किया गया है। इसके अतिरिक्त जातक 61, 63, 64, 65, 106, 125, 126, 164 और 207 संख्यक कथाओं में भी तात्कालीन नारी-समाज के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त होती है।

भगवान् बुध ने अपने जीवन काल में कभी भी कहीं स्वयम् को नारी विरोधी या नारियों की धार्मिक स्वतंत्रता के विरुद्ध खड़ा नहीं किया। बल्कि उन्होंने बुध-धम्म और संघ के उत्थान के लिए हमेशा अपनी उपासिका नारियों से यथेष्ठ सामाजिक व आर्थिक सहयोग प्राप्त किया है। जिसमें विसाखा जैसी उपासिका व अम्बपाली जैसी गणिका सहित अनेकों रानियाँ-महारानियाँ व सेट्ठी पुत्रियाँ प्रमुख रही हैं। जिनमें 73 महान् भिक्खुनीजन का जिक्र बारम्बार प्रमुखता से "थेरीगाथा" में किया गया है।

थेरीगाथा

थेरीगाथा गाथाओं (पाली श्लोकों) का एक संग्रह है, जिसमें 73 बुध-भिक्खुनियों के उद्गार सन्निहित हैं, जो 16 भागों में विभाजित हैं। अत्यंत संगीतात्मक भाषा में, आत्माभिव्यंजनात्मक गीति-काव्य की शैली के आधार पर, अपने जीवनानुभवों को व्यक्त करते हुए यहां बुध-भिक्खुनियों ने अपने जीवन-काव्य को गाया है। नैतिक सच्चाई, भावनाओं की गहनता और सबसे बढ़कर एक अपराजित वैयक्तिक ध्वनि, इन गीतों की मुख्य विशेषताएँ हैं। निब्बान की परम शान्ति से भिक्खुनियों के उद्गारों का एक-एक शब्द उच्छवासित है। यहाँ संगीत भी है और जीवन का सच्चा दर्शन भी। आधुनिक विचारकों ने प्रथम, अर्हत्व प्राप्त श्रेष्ठ भिक्खुनीजनों को बुध की बेटियाँ कह कर सम्मानित किया है। यहाँ तक कि महामानव बुध ने स्वयम् भिक्खु-संघ के गठन के मात्र 5 वर्ष उपरांत भिक्खुनी-संघ का गठन करने में कोई बाध्यता न रखी। उन्होंने अपने धम्म और संघ का द्वार सबके लिए उपलब्ध करा दिया। यहाँ तक भगवान् बुध को जो ज्ञान प्राप्त हुआ उसकी प्राप्ति से पूर्व उन्होंने माता रूपी सुजाता ग्वालिन के हाथों की खीर खाई थी, जिसके सम्मान में धम्मराज सम्राट असोक महान् ने सेनानीगाम में सुजातागढ़ स्तूप का निर्माण करवाया है।

थेरीगाथा की अनेक गाथाओं से नारी-समाज की स्थिति पर भी हमें रोशनी मिलती है। कोसल-देश की मुक्ता नाम की स्त्री घर के कामों से ऊबकर भिक्खुनी हो गई। उसने कहा है कि हमें आज तीन टेढ़ी वस्तुओं से छुटकारा मिल गया। वे वस्तुएँ थीं- ऊखल, मूसल और कुबड़ा पति। भद्दा कपिलायनी को यद्यपि उसकी आस्था बुध-धम्म में नहीं थी तथापि, अपने पति “महाकस्यप” का ही अनुगमन करते हम देखते हैं। भद्दा कुण्डलकेसा का लालची पति जब उसकी हत्या करने पर उतारू हो जाता है, तब वही अपने पति की हत्या करके भिक्खुनी हो जाती है। पटाचारा, वासिस्ठी और स्वयं पजापती गोतमी को अपने बच्चों तथा पति की मृत्यु के शोक से छुटकारा पाने के लिए, संसार-त्याग की प्रवृत्ति होती है, पहले नहीं। सावत्थि की उत्तरा नारी-समाज को कोसती है कि रात-दिन मूसलों से धान क्यों कूटती रहती हो, उसे छोड़ो, बुध-धम्म में आओ। उप्पलवण्णा का पति उसकी माता (अपनी सास) को भी पत्नी बनाकर रखे हुए था, यानि दोनों माँ-बेटी सपत्नीक बनकर जीवित थीं। पुण्णिका एक पनिहारिन यानि दासी थी, उसे रोज अपने मालिक से गाली और मार मिलती थी, जिससे छुटकारा पाने के लिए वह भिक्खुनी हुई।

राजगृह की पुरोहित-कन्या सुभा एक रात को बुध के दर्शन के लिए जा रही थी कि रास्ते में एक लम्पट युवक ने उसे जा घेरा। उसने कहा- सुभे! कमलकोष को भी मात करनेवाले तेरे स्वर्ण-सदृश-स्वच्छ-मुख-मंडल में स्थित इन दोनों नयनों को देखकर मैं आसक्त हो गया हूँ। हे प्रियदर्शिनी! तेरी दोनों भौंहें कमान-जैसी विस्तृत हैं, तेरे नेत्र कितने मादक हैं! इस पर सुभा ने अपनी आँख ही निकालकर उस लम्पट के हाथ पर रख दी। इसिदासी के वैश्य माता-पिता ने उसे तीन-तीन बार बेचा और दूसरे-दूसरों से उसका ब्याह किया। जीवक वैद्य के जन्म के बारे में हमने पहले देखा ही है कि उसकी माता ने पुरुषों की प्रेम-पात्री बने रहने के उद्देश्य से अपनी युवावस्था को अक्षुण्ण दिखाने के लिए अपने नवजात शिशु को कूड़े में फिंकवा दिया था। पजापती गोतमी के साथ साक्य-कुल की पाँच सौ नारियों के भिक्खुनी होने की कथा जो मिलती है, उससे पता लगता है कि वे सभी नारियाँ ऐसी ही थीं, जिनके पति या तो भिक्खु-संघ में सम्मिलित गये थे या मर गये थे। इस तरह स्वतंत्र विचारिका, उच्छेदवादिनी तथा स्थिरचित्तवाली नारियों की उस समय कमी न

थी। सम्पत्ति पर भी उनका अधिकार था और वे ज्ञान-विज्ञान में अगुआ थीं। कुछ नारियाँ पूर्ण विदुषी थीं- जैसे बेसाली की सच्चा, लोला, अपवादिका तथा पटाचारा आदि।

भगवान् बुध नारी-समाज के सम्बन्ध में बहुत-कुछ क्रांतिकारी विचारों से सहमत थे; क्योंकि आनन्द के प्रयास से जब भिक्खुनी-संघ का निर्माण हुआ, तब भगवान् बुध ने कहा- आनन्द! मैं स्त्री-पुरुष सबको समान अवसर प्रदान करने में सफल हुआ। भिक्खु और भिक्खुनी संघ दोनों आगे चलकर संसार में मानवता के लिए एक मिसाल कायम करेंगे।

परिचर्चा

भगवान् बुध के समय में ही, बिहार-प्रदेश की नारियों ने बुध-धम्म के विकास में जो योगदान किया, वह अभूतपूर्व घटना है। बुध-भिक्खुनियों के संघ में प्रथम-प्रथम महापजापती गोतमी ही पाँच सौ नारियों को लेकर भिक्खुनी हुई। इसके बाद तो नारी-समाज में बुध-भिक्खुनी होने की लहर-सी उठ गई और भिक्खुनियों का एक वृहत् संगठन ही तैयार हो गया। ये नारियाँ भी घूम-घूमकर धम्मोपदेश करने लगीं और संघ में भिक्खुनियों को दीक्षित भी करने लगीं। वे जहाँ भी जातीं, भिक्खु-संघ से अलग उनके संघ का पड़ाव होता था। जगह-जगह भिक्खुनियों के लिए विहार भी बन गये थे। सावत्थि में विसाखा ने भिक्खुनियों के लिए ही एक अलग विहार बनवाया था, जिसके निर्माण में 29 करोड़ मुद्राएँ व्यय हुई थीं। इन भिक्खुनियों में से बिहार-प्रदेश की भिक्खुनियों पर हम यहाँ प्रकाश डालेंगे, जिससे स्पष्ट होगा कि बिहार की महान् नारियों की बुध-धम्म में क्या देन है।

वत्सा बेसाली नगर की एक भिक्खुनी की चर्चा 'थेरीगाथा' में है, जिसके नाम का स्पष्ट उल्लेख नहीं है। किन्तु गाथा के पढ़ने पर ज्ञात होता है कि शायद इसका नाम वत्सा था। एक दिन वह भोजन के लिए साग पका रही थी कि कड़ाही में ही साग जल गई। इस घटना से इसके अन्तर का पट खुल गया। इसके मन में आया कि अधिक देर तक आग पर रखने के कारण जिस तरह साग जल गई, उसी तरह यदि अधिक समय तक समाधि और ध्यान का कर्म किया जाय, तो अन्तर के राग-द्वेष भी जल जायेंगे। इसने ध्यान और चिन्तन को बढ़ाकर ज्ञान प्राप्त कर लिया तथा ऐशो-आराम के सारे सामान त्याग दिये। इसने अपने पति के पास जाकर कहा- स्वामिन्! मेरा मन संसार से उचट गया है। मैं अब गृहस्थ-धर्म को निबाहने में अपने को असमर्थ पा रही हूँ। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं अब पबज्जा लूँ! पत्नी की मानसिक दशा तथा शरीर के कपड़े आदि देखकर पति ने समझ लिया कि अब सचमुच इसका मन गृहस्थी से उचट गया है। विवश होकर उसने पबज्जा लेने की आज्ञा दे दी। वत्सा महापजापति गोतमी के पास जाकर धम्म में दीक्षित हो गई। दीक्षा के बाद गोतमी उसे भगवान् बुध के पास ले गई। बुध ने इसके सच्चे आन्तरिक बैराग्य की सराहना की। यह वत्सा एक खत्तिय-कन्या थी और एक लिच्छवि-युवक से ब्याही गई थी। पहले ही गोतमी के धम्मोपदेश सुनकर इसके मन में बैराग्य जगा था। वह कई बार पहले ही पबज्जित होना चाहती थी; पर इसका पति हर बार रोक देता था। किन्तु कड़ाही में साग जलनेवाली घटना ने इसके मन में ऐसा बैराग्य भर दिया जो किसी प्रकार उच्छिन्न होनेवाला नहीं था।

धम्मदिन्ना राजगृह निवासी एक वैस्य सेठ की पुत्री थी। विसाख नाम के एक सेट्ठी-पुत्त से उसका विवाह हुआ था। एक दिन “विसाख” अपने साथियों के साथ भगवान् बुध का उपदेश सुनने गया। धम्मोपदेश सुनकर उसके मन में बैराग्य की भावना जग गई। रात्रि में जब वह घर लौटा, तब उसकी पत्नी "धम्मदिन्ना” ने भोजन के समय जो मीठी-मीठी बातें कीं, उन बातों की ओर उसने जरा भी अभिरुचि नहीं दिखाई। उसने भोजन भी अनिच्छापूर्वक किया। धम्मदिन्ना ने समझा, कोई गलती मुझसे हुई है। उसने हाथ जोड़कर, आँखों में आँसू भरकर कहा- स्वामिन्! यदि मुझसे कोई अपराध हुआ हो, तो क्षमा करो! विसाख को करुणा आ गई। उसने करुणाद्र वाणी में कहा- नहीं प्रियतमे! तुम्हारी ओर से ऐसी कोई बात नहीं हुई है। मैं ही अब तुम्हारे प्रेम का पात्र नहीं रहा। मेरा मन अब बुध के धम्म की ओर मुड़ गया है। अब तुम्हें मुझसे सुख प्राप्त नहीं होगा। तुम मेरा सम्पूर्ण ऐश्वर्य लेकर पिता के घर चली जाओ !! धम्मदिन्ना ने भारतीय नारियों की तरह ही निवेदन किया- स्वामिन्। मेरा सबकुछ तो आप ही हैं। अब मैं पिता के घर नहीं जाऊँगी। आपका ही अनुगमन करूँगी! दोनों पति-पत्नी बुध-संघ में पबज्जित हो गये। किन्तु धम्म के चिन्तन में पत्नी ने पति से बाजी मार ली। धम्मदिन्ना थोड़े ही काल में बुध-धम्म की परम पंडिता हो गई। बुध-धम्म का प्रचार करनेवाली भिक्खुनियों में इसका स्थान प्रथम था। इसकी वक्तृत्व-शक्ति अपूर्व थी। इसका विचार था कि जो कोई चित्तवृत्तियों को अवदमित करके शान्ति-लाभ कर लेता है और जो विषय-भोग का पूर्णतया उच्छेद कर देता है, वही "ऊर्ध्वस्त्रोत" कहलाता है। इसके धम्मज्ञान की थोड़ी चर्चा पहले भी की गई है, जो इसके और इसके पति “विसाख" के बीच हुआ था।

विसाखा भद्दिय (भागलपुर के पास का भदरिया) नगर के महासेठ मेण्ड्क की पौत्री थी। इसके पिता का नाम 'धनंजय' था और माता का 'सुमना'। जब विसाखा सात साल की छोटी बच्ची थी, तभी भगवान् बुध भद्दिया नगर में गये थे। इसने अपने दादा मेण्ड्क की आज्ञा पाकर 400 कुमारियों और 400 दासियों को साथ लेकर भगवान् बुध का, नगर से बाहर निकल अगवानी करके, स्वागत किया था। आगे चलकर यह बुध-संघ की सबसे बड़ी दायिका (दान देनेवाली) हुई। बुध-धम्म में इसके अनुराग की पराकाष्ठा इसी से समझनी चाहिए, कि यह बराबर कहा करती थी- 'बुध-शासन के लिए, सोचो मत, अभी पैर धोकर आसन लगा ध्यान में लग जाओ' आगे चलकर यह भी एक प्रसिद्ध बुध-भिक्खुनी हुई। विसाखा जब लगभग बारह साल की हुई, तब अपने पिता-माता के साथ प्रसेनजित् के कोसल-राज्य के "साकेत" नगर में जाकर बस गई। प्रसेनजित् ने मगधराज बिम्बिसार से अपने देश में बसने के लिए एक महासेठ की माँग की थी, जिसके अनुसार विचार करके बिम्बिसार ने मेण्ड्क के पुत्र "धनञ्जय" को भेजा था। विसाखा जब युवती हुई, तब उसका विवाह "सावत्थि" नगर के सेठ "मिगार" के पुत्त पुण्यवर्धन से हुआ। इसके विवाह में सावत्थिवासी कोसल-नरेश प्रसेनजित स्वयं सम्मिलित हुए थे। वे वर-पक्ष की ओर से गये थे। उनका स्वागत-सत्कार भी धनञ्जय ने शाही ढंग से ही किया था। बारात सप्ताह तक जमी रह गई और स्वागत-सत्कार का शाही राग-रंग चलता ही रहा। अन्त में स्वयं प्रसेनजित ने धनञ्जय को लिख भेजा कि हमलोगों का भरण-पोषण कब तक करोगे। कन्या की विदाई कब होगी, सूचित करो। इसके उत्तर में विसाखा के पिता धनञ्जय ने लिख भेजा- "अब तो वर्षा ऋतु आ गई। चार मास तक कहीं जाना-आना कठिन है। दल-बल-सहित आपका सत्कार मेरे जिम्मे है। महाराज को मालूम कि जब हम विदाई करें, तभी श्रीमान् यहाँ से जायें!" तीन मास तक बारात साकेत में पड़ी रही। इतने दिनों के बाद भी विसाखा के लिए बननेवाले आभूषण बनकर तैयार नहीं हुए थे। एक दिन कारपरदाज ने आकर धनञ्जय से निवेदन किया कि- "स्वागत की सारी सामग्री पूर्ण है, किन्तु लकड़ी (ईन्धन) घट गई है। बरसात का समय है, पेड़ कटवाने पर भी सूखी लकड़ी नहीं मिलेगी।" इसपर धनञ्जय ने आदेश दिया कि हस्तिसाला, अश्वसाला, गोसाला आदि उजाड़कर ईन्धन का काम लिया जाय। आदेश का पालन किया गया; पर इस तरह भी पन्द्रह दिनों तक ही ईन्धन का काम चला। पुनः जब ईन्धन घट गया, तब उसने आदेश दिया कि कपड़े का गोदाम खोल दो। उससे साड़ियाँ निकालकर मोटी बत्तियाँ बनाओ और उन्हें तेल में भिगो कर जलाओ! पन्द्रह दिनों तक सारी बरात का भोजन साड़ियाँ जला-जलाकर पकता रहा। अब वर्षा बीत गई थी ओर विदाई का समय आ गया था। विदाई के दिन धनञ्जय ने नौ करोड़ मूल्य के महा आभूषणों से विसाखा को सजाया। पुत्री के स्नान-चूर्ण के लिए सारे सामान दिये और उसके बाकी खर्च के लिए 54 सौ बैलगाड़ियों पर धन लदवाकर दिया। कन्या के साथ पाँच सौ दासियाँ, पाँच सौ उत्तम रथ और अन्य वस्तुएँ सौ-सौ की संख्या में देकर धनञ्जय ने बरात की विदाई की। विसाखा का श्वसुर "मिगार" अन्य मत का अनुपालक था । जब विसाखा अपने श्वसुर के गृह में गई, तब बुध-संघ को दान देने लगी। यह नित्य पाँच सौ बुध-भिक्खुओं को भोजन कराकर स्वयं भोजन करती थी। बुध-धम्म के प्रति इसकी ऐसी श्रद्धा देखकर इसका श्वसुर "मिगार' इसे धर्म-विरोधिनी मानने लगा और सतत प्रयास करने लगा कि मेरी पतोहू निगण्ठों में भक्ति करे। पर उसकी सारी चेष्टा विफल हो गई। इधर "विसाखा" भी चाहती थी कि मेरे श्वसुर निगण्ठों की आसक्ति छोड़कर बौद्धों में श्रद्धा करें। अन्त में बहुत कसमकस के बाद "विसाखा" की जीत हुई। इसने अपनी सेवा, सुशीलता, धम्मनिष्ठा, गुणों तथा तर्कों से अपने श्वसुर की निष्ठा बुध-धम्म में स्थापित कर दी और परमभावना में उनसे श्रेष्ठ साबित हो गई, अतः बौद्धों ने उसका नाम "मिगारमाता" रख दिया। उसी समय से "विसाखा" के नाम के पहले "मिगारमाता" विशेषण भी जुड़ने लगा। विसाखा ने सावत्थि में बुध-संघ के निवास के लिए, "पूर्वाराम" नामक विहार का निर्माण कराया था, जो "मिगारमातुपासाद" के नाम से भी अभिहित होता था। यह विहार दो-मंजिला बना था और नौ मास में तैयार हुआ था। इसके निर्माण में उनतीस करोड़ मुद्राएँ व्यय हुई थीं। इस घटना के समय भगवान् बुध सावत्थि के ही विहार में थे। पूर्वाराम विहार के निर्माण की कथा "धम्मपद अट्ठकथा" में मिलती है। उसके अनुसार एक दिन विसाखा बुध के प्रवचन सुनने के लिए अपनी दासी "सुपिया" के साथ विहार में गई। विहार के द्वार पर ही विसाखा ने अपने आभूषण शरीर से उतारकर दासी को दे दिये; क्योंकि बुध के पास वह कभी श्रृंगार करके या सज-धजकर नहीं जाती थी। बुध के धम्मोपदेश सुनने के बाद वह दासी के साथ जब विहार से बाहर आई, तब उसने पहनने के लिए दासी से आभूषण माँगे। दासी धम्मोपदेश सुनने में ही आभूषणों को लेना भूल गई थी| दासी ने जब आभूषणों के वहीं छूट जाने की बात कही, तब विसाखा ने कहा- "जाओ, ले आओ। पर यदि किसी बुध-भिक्खुजन ने उसे रख दिया हो, तो न लाना।" सभी के चले जाने पर आनन्द ने उन आभूषणों को सुरक्षित रख दिया था। दासी जब आभूषण लेने आई, तब आनन्द ने कहा- "वहाँ रख दिये हैं, ले जाओ।" पर दासी ने कहा- आपने इन्हें छू दिया है, मेरी मालकिन इन्हें अब नहीं पहन सकती।" आनन्द ने कहा- "हम लोग भी तो नहीं ले सकते, हमारे लिए तो धातु-ग्रहण वर्जित है।" आनन्द के कथन को जानने के बाद विसाखा ने उन्हें मंगा लिया। वे आभूषण नौ करोड़ मूल्य के थे और उनके बनाने की मजूरी सौ हजार (एक लाख रुपये) थी। इन आभूषणों को कोई दूसरा खरीदनेवाला भी नहीं था। विसाखा ने इतने मूल्य देकर स्वयं उन्हें खरीदा और नौ करोड़ मूल्य की जमीन खरीदकर वहाँ पूर्वाराम बनवाया, जिसके बनवाने में और 20 करोड़ लगे थे। इस विहार के निचले हिस्से में 400 और ऊपरी तल्ले पर भी 500 कोठरियाँ बनी थीं। इसकी बनावट की देख-रेख का भार स्वयम् महामौद्गल्यायन ने लिया था। विसाखा को भगवान् बुध ने नारियों के कर्त्तव्य की स्वयं शिक्षा दी थी।

उन्होंने कुलवन्ती स्त्रियों के लिए आठ गुणों को ग्रहण करने का विधान बतलाया है। ये आठ सुत्त इस प्रकार हैं- (1) कुलवधूओं को सहानुभूतिपूर्वक अपने सास-ससुर की सेवा करनी चाहिए, उनसे सर्वदा मीठे वचन बोलने चाहिए और उनके प्रत्येक सुख का ख्याल करना चाहिए। (2) अपने पति द्वारा आदृत मित्र तथा संत-मुनियों की उचित सेवा में मनोयोगपूर्वक तत्पर रहना चाहिए। (3) घर में रखी हुई कपास के समुचित उपयोग करने की कला में स्त्रियों को पूर्ण दक्ष होना चाहिए। (4) घर के दास-दासियों के जिम्मे लगाये गये कामों पर और उनके भोजन तथा वस्त्र की व्यवस्था पर पूरी निगरानी रखनी चाहिए। (5) पति द्वारा घर में लाये धन की, समुचित उपयोग के बाद, रक्षा करनी चाहिए। उसे अपने लिए, खर्च नहीं करना चाहिए। (6) तिसरण (बुध, धम्म और संघ) को स्वीकृत कर उपासिका बनना चाहिए। (7) पंचसील का पालन कड़ाई से करना चाहिए। (8) कृपणता त्याग कर दान देने में मुक्तहस्त होना चाहिए। विसाखा ने अत्यन्त वृद्धा होकर निब्बान-पद प्राप्त किया। उस समय उनकी आयु 120 साल की थी। बुढ़ापे में उन्होंने भी पौत्र-मृत्यु का दुःख भोगा था।

जयन्ती का जन्म बेसाली में हुआ था और यह एक लिच्छवि-राजकुमारी थी। इसने स्वयं बुध के उपदेशों को सुनकर धम्म को ग्रहण किया था और इसने बाद में अर्हत्-पद भी प्राप्त किया। यह बुध-शासन के सप्ताङ्गों की पूर्ण साधिका थीं। (सम्यक दिट्ठि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम और सम्यक् स्मृति– ये समाधि के सात अंग हैं। सम्यक समाधि को मिलाकर ये ही आष्टांगिक मार्ग कहलाते हैं।)

चित्ता राजगृह/गिरिव्रज के अत्यन्त वैभवशाली गृहपति की कन्या थी। एक बार इसने भगवान् बुध का उपदेश राजगृह नगर के द्वार पर सुना। तभी से इसकी श्रद्धा बुध-धम्म में हुई। बाद में इसने महापजापती गोतमी से पबज्जा ली। पबज्जा लेने के बाद यह रोगिणी हो गई थी और शरीर जर्जर हो गया था। छड़ी का सहारा लेकर गृधकूट पर्वत पर साधना करने गई। पर्वत पर चढ़तें समय इसका चीवर गिर गया और भिक्खा-पात्र हाथ से छूटकर टूट गया। फिर भी हिम्मत न हारकर चढ़ती ही गई। गृधकूट पर जाकर इसने अवधूत-जप की साधना आरंभ की ओर अन्त में इसने ज्ञान प्राप्त कर अर्हत्-पद लाभ लिया।

मेत्तिका ने भी जवानी के बाद, वृद्धावस्था में, शक्तिहीन शरीर होने पर भी गृधकूट पर्वत पर जा, अवधूत-व्रत की साधना की। यह राजगृह के एक धनी पण्ड़ित की लड़की थी। यह बुध-शासन की "तीनों विद्याओं" की पण्ड़िता हुईं। इसने भी अर्हत्-पद प्राप्त किया था।

अभयमाता उज्ज्यिनी की प्रसिद्ध रुपवती वेश्या थी; पर बिम्बिसार की रखेली बनकर राजगृह में रह रही थी। इसका मूल नाम पद्मावती था। बिम्बिसार से इसको एक पुत्त हुआ, जिसका नाम अभय था। अभय को बिम्बिसार बहुत प्यार करता था। बाद में अभय बुध-भिक्खु हो गया। अपने पुत्त के प्यार से तथा उसके उपदेशों के प्रभाव से पद्मावती भी भिक्खुनी हो गई। अभय को अपनी माता के जीवन से अत्यन्त विरक्ति थी। वह बार-बार अपनी माँ से कहता– 'माँ! इस अशुचि और दुर्गन्धमय रस से युक्त काया को, अपने पैरों से केशों तक, जरा गौर से तू देख! इन लांछन-भरी बातों से पद्मावती ने परम लज्जा का अनुभव किया और पबज्जा ले ली। पबज्जा के बाद संघ में इसे "अभयमाता" नाम से संबोधित किया जाता था। अपनी कहानी इसने अपने ही मुख से कही है।

दन्तिका रहनेवाली तो सावत्थि की थी; पर राजगृह को बुध-धम्म का तीर्थ मानती थी। इसलिए, राजगृह में ही रह गई थी और बुध-धम्म की कथा श्रवण कर अपने को तृप्त करती थी। एक दिन इसने एक पीलवान को देखा कि उसने महाकाय विशाल हाथी को अपने अंकुश से वश में करके बैठा दिया। दन्तिका ने उपमा बैठाई कि विषय-वासना-जैसी दुर्जेय वस्तु का भी दमन अवश्य किया जा सकता है। वह गृधकूट पर्वत पर चली गई और एकान्त में उसी हाथी का ध्यान करके उसने साधना आरम्भ की। अन्त में उसने समाधि को बढ़ाकर अपनी चित्तवृत्तियों का दमन कर ही लिया।

सकुला "थेरीगाथा" की चौंतीसवीं भिक्खुनी है। इसने धम्मदिन्ना से बुध-शासन की शिक्षा ली थी। इसने राजगृह के एक उच्च कुल में जन्म लिया था। यह बुध-संघ में अत्यन्त ओजस्वी वाचन करनेवाली भिक्खुनी थी। धम्मदिन्ना की तरह ही धम्म के प्रचार में सुविख्यात थी। इसके प्रवचन को सुनकर श्रोतागण् मंत्रमुग्ध हो जाते थे। (पूर्वजन्म का स्मरण-ज्ञान, जन्म-मृत्यु का ज्ञान और आस्त्रवों के क्षय का ज्ञान– इनके ज्ञानी 'त्रेविद्य' कहलाते हैं।)

लोगों की धारणा थी कि इसने एक वृक्ष-देवता को वश में करके वक्तृत्व-कला में ऐसी निपुणता प्राप्त की है, इसके मधुर और ओजस् पूर्ण वचनों के सम्बन्ध में लिखा है कि वर्षा के निर्मल जल की तरह इसकी वाणी-रूपी जीवन-सुधा को ज्ञानीजन, प्यासे पथिकों की तरह, पान करते हैं।

सोमा का जन्म राजगृह में हुआ था। यह मगधराज बिम्बिसार के पुरोहित की पुत्री थी। इसने ध्यान और ज्ञान के द्वारा युवावस्था में ही अपनी सभी विषय-वासनाओं का दमन कर लिया था। एक दिन जब यह "अन्धक वन" में अपनी समाधि में लीन थी, तभी पापी मार एक युवक का वेश धारण कर इसके सामने प्रकट हुआ और कहने लगा-"अरी सुन्दरी! अपनी भरी जवानी में ही तू यह क्या कर रही है? जिस वस्तु को प्राप्त करने में बड़े-बड़े सन्त-मुनि कठिनाई का अनुभव करते हैं, उसे तेरी जैसी 'दो अंगुल' का ज्ञान रखनेवाली नारी कैसे प्राप्त कर सकती है? वासना को जला करके निर्विकार हुई सोमा ने कहा– पापी मार! तू स्वयं मेरे द्वारा मार दिया गया है! जा, तू अब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है!!" (स्त्रियाँ भात पकाते समय अपनी दो अंगुलियों के सहारे ही पके तंडुल का ज्ञान प्राप्त करती है। इसीलिए दो अंगुल के ज्ञान की कहावत उस समय प्रचलित थी।)

भद्दा कपिलायनी का जन्म तो 'साकल' (स्यालकोट : पंजाब) नगर के कौसिक गोत्रीय पण्डित के कुल में हुआ था। किन्तु इसका विवाह मगध के प्रसिद्ध धनाढ्य पण्डित 'पिप्पली माणवक' (महाकास्यप) के साथ हुआ था। यह एक अत्यन्त सुन्दरी रमणी थी। इसके शरीर का गठन सुवर्ण-निर्मित नारी-मूर्त्ति की तरह था। इसका पिता भी सागल का प्रसिद्ध धनवान् व्यक्ति था। उसने अपनी पुत्री के साथ दहेज में हजारों गाड़ियों पर सामान लदवाकर "पिप्पली माणवक" के घर भेजा था विवाह के बाद भी दोनों पति-पत्नी (पिप्पली और भद्दा कपिलायनी) सहवास से रहित होकर धर्माचरण में दत्त चित्त थे। यद्यपि अपने पति महाकास्यप के साथ ही इसने भी अपना माथा मुड़ाकर सदाचर को अपना लिया था, तथापि "तित्थियाराम विहार" में अपने पति से अलग रहकर, पाँच वर्षों तक यह साधना करती रही। बाद सें महापजापती गोतमी ने इसे पबज्जित करके संघ की सरण में ले लिया। महाकास्यप की तरह इसने भी अर्हत्त्व प्राप्त किया था। यह पतिपरायणा ऐसी थी कि अर्हत्त्व प्राप्त कर लेने पर भी महाकास्यप के गुणों का ही सर्वदा गान करती थी। यह कहती थी- शान्त-समाधिनिष्ठ महाकास्यप बुध भगवान् के उत्तराधिकारी पुत्त हैं! इसका वास्तविक नाम तो भद्दा ही था; पर महाकास्यप का गोत्र 'कपिलायन' था, इसलिए यह भद्दा कपिलायनी कहलाती थी। यह बुध-शासन की तीनों विद्याओं का साक्षात्कार कर लेनेवाली मृत्यु-विजयिनी भिक्खुनी थी।

बिमला बेसाली की एक गणिका की पुत्री थी। इसने भी अपनी आयु की वयःसन्धि में वंशानुगत पेशे को अपनाया था। यह स्वयं कहती है कि मैं रुप-लावण्य, वैभव तथा यस की ख्याति से मतवाली बनी रहती थी। रूप और यौवन के अहंकार में अपने (स्त्रियाँ भात पकाते समय अपनी दो अंगुलियों के सहारे ही पके तंडुल का ज्ञान प्राप्त करती है। इसीलिए दो अंगुल के ज्ञान की कहावत उस समय प्रचलित थी) जीवन के प्रति मुझे बड़ा गर्व था। मैं गृहद्वार पर बैठकर मन्द मुस्कान और सौंदर्य की किरणों बिखेरा करती और युवकों को फँसाने के लिए व्याध्र की तरह अपने विलास-विश्राम का जाल फैलाया करती थी। किन्तु, आज मैंने अपने सभी पापों को धो-पोंछकर फेंक दिया है और परम शान्ति में लीन हो गई हूँ! अब मुझे, कोई विषय नहीं सता सकता! इसने अपनी भरी जवानी में ही धम्म-साधना की ओर अपने मन को लगाया था। एक दिन महामौद्गल्यायन बेसाली की गलियों में भिक्खाटन करते-करते बिमला की गली से गुजरे। बिमला की दृष्टि मौद्गल्यायन की परम शान्त-सौम्य आकृति पर मुग्ध हो गई। इसे अपनी जवानी और रूप पर तो पूरा अमिमान था ही, किसी को फँसा लेना इसके बाँयें हाथ का खेल भी था। महामौद्गल्यायन चर्यावृत्ति करके जब अपनी कुटिया में लौटे, तब वहाँ पूर्ण साज-सज्जा में बिमला उपस्थित मिली। इसने अपनी मीठी-मीठी बातों तथा अनेक मनमोहक हाव-भावों के द्वारा मौद्गल्यायन को जाल में फँसाना चाहा। किन्तु मौद्गल्यायन परम निब्बानप्राप्त (जीवन्मुक्त), रागरहित और विमलचित्त भिक्खु थे। उन्होंने बिमला को इस कुत्सित व्यवहार के लिए, इतना धिक्कारा कि इसका रुप और यौवन का सारा घमण्ड़ चूर-चूर हो गया। वह ग्लानि और लज्जा से मारे पानी-पानी हो गई। इसने वहीं सन्यास लेने के लिए ठाना; पर उस समय इसपर विश्वास कौन करता। यह संघ से अलग ही रहकर अकेले ही धम्म-साधना में लग गई। यह कड़ाई के साथ पबज्जा के सभी नियमों का पालन करती और समाधि को साधती। जब इसने सारी चित्तवृत्तियों को वश में कर लिया, तब वर्षों बाद जाकर संघ ने अपनी सरण में इसे लिया।

सीहा का थेरियों में चालीसवाँ स्थान है। यह बेसाली गणतंत्र के सेनापति (सिंह सेनापति) की भगिनी-पुत्री थी। मामा के नाम पर ही इसका भी नाम सीहा रखा गया था। सिंह सेनापति ने निगन्ठ मार्ग छोड़कर जब बुध-धम्म को अपनाया, तब इसने भी मामा की देखा-देखी बुध-धम्म को अपना लिया। आगे चलकर इसने बैराग्य धारण किया; पर सात वर्षों तक प्रयास करते रहने पर भी इसके अन्तर से वासना का अंकुर नहीं उखड़ सका। तब इसने भोग द्वारा तृष्णा का अन्त करना चाहा, पर तृष्णा का अन्त होना तो दूर रहा,

तृष्णा दिन-दिन बढ़ती गई। बाद में अपने ऊपर इसे ग्लानि होने लगी। यह बड़े ही कामुक स्वभाव की नारी थी। अपने चंचल चित्त से यह इतनी उद्विग्न हो गई कि इसका जीवन भार हो गया। एक दिन इस जीवन से छुटकारा पाने के लिए इसने फाँसी की रस्सी लटका दी। किन्तु बुध की महिमा अपार थी। इसने जैसे ही रस्सी में अपना गला डाला कि चित्त एकाग्र होकर ध्यानमग्न हो गया और इसे चित्त एकाग्र करने का मार्ग मिल गया। बाद में इसने इसी प्रकार साधना करते-करते ज्ञान प्राप्त कर लिया।

भद्दा कुण्ड़लकेसा भिक्खुनी का जीवन बड़ा ही रोमांचकारी है। यह राजगृह के एक बड़े सेठ की दुलारी बेटी थी। इसका पिता राजगृह नगर का कोषाध्यक्ष था। बड़े वैभव और भोग-विलास के बीच भद्दा का लालन-पालन हुआ था। सुविधा और शोखी के कारण यह एक राजपुरोहित के लम्पट पुत्र पर आसक्त हो गई थी। उस युवक का नाम सत्थुक था। एक दिन सत्थुक किसी बड़ी चोरी के अपराध में पकड़ा गया और उसे मृत्यु दणँड दे दिया गया। सजा सुना देने के बाद वधिक उसे वध-स्थान की ओर लेकर चले। भद्दा को जब यह बात मालूम हुई, तब यह घर में अन्न-जल छोड़कर पड़ गई और इसने माता-पिता से स्पष्ट कह दिया कि जबतक पुरोहित-पुत्र मुझे नहीं मिलेगा, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगी, जान दे दूँगी। सेठ ने अपनी लाड़ली पुत्री को बहुत समझाया; पर इसने एक भी न सुनी। लाचार होकर सेठ ने राजा को चोरी गये धन के बराबर मूल्य के अतिरिक्त भी धन देकर पुरोहित-पुत्र को छुड़ा लिया। इसके बाद सेठ ने सत्थुक को घर लाकर विविध रत्न-आभूषणों और सुन्दर वस्त्रों से मंडित करके पुत्री को सत्थुक के हवाले कर दिया। भद्दा अपने अभिसिप्त वर को प्राप्त कर परम प्रसन्न हुई और खुशी-खुशी पति के गृह गई। किन्तु 'सत्थुक' अत्यन्त लम्पट और लोभी प्रकृति का युवक था। चरित्र नाम की वस्तु उसके पास थी ही नहीं | उसकी दृष्टि अपनी परम रूपवती युवती पत्नी पर नहीं थी, उसकी दृष्टि तो उसके मूल्यवान् आभूषणों पर लगी थी। एक दिन सत्थुक ने भद्दा से कहा– "प्रिये! मैं जिस दिन चोरी के अपराध में पकड़ा गया था और वध-स्थान की ओर लाया जा रहा था, उस दिन मैंने वध-स्थान के देवता की मनौती की थी कि– हे वधस्थान के देवता! यदि मैं आज किसी तरह छूट जाऊँगा, तो तुम्हें पूजा चढ़ाऊंगा! पूजा की सामग्री तैयार करके हमलोग चलें और देवता को पूजा चढ़ा आवें! पतिपरायणा भद्दा ने बड़ी प्रसन्नता से पृजा की सामग्री जुटाई, और नाना आभूषणों तथा वस्त्रों से सज-घजकर, कुलवधू की तरह दास-दासियों को साथ लेकर देव-स्थान की ओर चल पड़ी। कुछ दूर जाने पर सत्थुक ने सभी दास-दासियों को घर लौटा दिया और भद्दा के साथ उस निर्जन वध-स्थान की ओर चला। दास-दासियों के लौटा देने का मर्म उस भोली भद्दा ने नहीं समझा। वध-स्थान एक ऊंची पहाड़ी पर था। उस पहाड़ी के ऊँचे शिखर पर पहुँचकर सत्थुक ने कहा– 'भद्दे! अपने शरीर पर के एक वस्त्र को छोड़कर सारे आभूषणों और वस्त्रों को उतार दो! सत्थुक की घृणित आकृति देखकर भद्दा सहम गई। उसने कहा- "स्वामी, ऐसा क्यों?" इस पर सत्थुक ने कहा- 'मुझे तेरे मूल्यवान् आभूषण चाहिए! भद्दा ने गिड़गिड़ाकर कहा - 'ये आभूषण क्या, मैं भी तो आपकी ही हूँ।" उसने डाँटते हुए कहा- चुप रह, तेरी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है, चुपचाप आभूषणों को उतार दे! भद्दा ने अपने को असहाय देखकर बड़े ही करुण स्वर में कहा– 'स्वामी! मैं मरने के लिए, तैयार हूँ; पर मरने के पहले मेरी एक कामना पूरी कर दें, जिससे मरने के बाद मुझे हृदयगत शान्ति मिले। कृपया एक बार आप अपने कोमल और विशाल भुजपाशों से प्रेमपूर्वक आलिंगन कर लें। यही मेरी अन्तिम अभिलाषा है! सत्थुक इसकी इतनी-सी विनती मानने के लिए राजी हो गया। उसने भुजपाशों को फैलाकर ज्योंहिं आलिंगन करना चाहा कि भद्दा ने उसे ऐसा झटका दिया कि पहाड़ के शिखर से वह हजारों फीट नीचे आ गया और वहीं उसका काम तुरंत तमाम हो गया। पति की हत्या करने के बाद खिन्नमना भद्दा ने पिता के घर जाना उचित नहीं समझा। पहले ही इसने गुरुजनों के विचार के विपरीत सत्थुक से विवाह किया था। अब इसे सारे संसार के सुखों से विरक्ति हो गई। यह वहीं से चलकर निगण्ठनाथपुत के धम्म में दीक्षित हो गई। निगण्ठ-धम्म में दीक्षित हो जाने पर धम्म-नियम के अनुसार इसके माथे के केशों का लुंचन हुआ। बाद में जो इसके माथे पर केश जमे, वे घुंघराले कुण्ड़ल की आकृति वाले हुए। इसलिए, यह कुंड़लकेसा भी कही जाने लगी और इसका नाम "भद्दा कुण्डलकेसा" पड़ा। निगण्ठ-धम्म में रहते हुए, इसने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया और अल्पकाल में ही यह एक प्रसिद्ध विदुषी हो गई। तर्क-शास्त्र में इसकी बुद्धि की गहरी पैठ थी। शास्त्रों में निष्णात होकर यह जिस आश्रम में जाती, वहाँ के बड़े-बड़े विद्वानों से शास्त्रार्थ करती तथा विजय प्राप्त कर यश अर्जित करती थी। निगण्ठ-धम्म की इस प्रसिद्ध भिक्खुनी ने बड़े-बड़े धर्माचार्यों के विद्यामद का दमन कर दिया था। एक दिन एक आश्रम में, संयोग से, भद्दा का साक्षात्कार धम्म-सेनापति सारिपुत्त से हो गया। दोनों एक-दूसरे की विद्धत्ता की प्रसिद्धि से अवगत थे। जुटान अच्छी थी, दोनों में शास्रार्थ छिड़ गया। पहले भद्दा ने प्रश्नों की बौछार की; किन्तु सारिपुत्त की विद्धत्ता का क्या कहना था भद्दा के मुख से प्रश्न के निकलते ही सारिपुत्त का उत्तर तुरन्त ही उसका प्रतिकार कर देता– मानो विपक्षी योद्धा की प्रत्यंचा से छूटे हुए बाणों को वहीं पर दूसरे पक्ष का योद्धा छिन्न-भिन्न कर देता था। अन्त में थककर भद्दा मौन हो गई | अब सारिपुत्त ने अपने ज्ञान-तूणीर से केवल एक तीर निकाला– अच्छा भद्दे! बताओ तो, एक वस्तु क्या है? भद्दा ने ऐसे प्रश्न पर कभी गौर नहीं किया था। यह पहले प्रहार से ही आहत हो गई। वह सारिपुत्त के पैरों पर गिर पड़ी और कहा– मुझे अपनी सरण में ले लें प्रभो!! सारिपुत्त ने कहा– 'मेरी सरण में क्या आओगी, मेरे सास्ता बुध की सरण में जाओ! गृधकूट पर्वत पर जाकर भद्दा ने भगवान् बुध के दर्शन किये। वहीं उसने पबज्जा ली, और भिक्खुनी-संघ में प्रविष्ट हुई। उसकी विद्वत्ता के सम्बन्ध में तो कुछ कहना

ही नहीं था। यह बुध-धम्म की महोपदेशिका हुई इसने अंग, मगध, वज्जि, कासी और कोसल-प्रदेशों में घूम-घूमकर पचास वर्षों तक बुध-धम्म का प्रचार किया था। यह परम मुक्ति की अधिकारिणी हुईं थी।

वासिस्ठी का जन्म वैशाली नगर के एक उच्च कुल में हुआ था। विवाहोपरान्त पति के साथ इसका जीवन बड़ा सुखपूर्ण था और सुठ-चैन के साथ यह गृहस्थ-जीवन बिता रही थी। कुछ दिनों के बाद वासिस्ठी के इकलौते बेटे का देहान्त हो गया। अपने पुत्र के लिए रात-दिन शोकाकुल हो रोती-पीटती रहती थी। पति, सास, ससुर आदि परिजनों की लाख चेष्टा करने तथा धैर्य बँधाने पर भी इसका शोक कम नहीं हुआ। पुत्र के शोक-संताप से अन्त में यह बिलकुल पागल हो गई और उसी अवस्था में घर छोड़कर निकल भागी। अपनी विक्षिप्तावस्था में बाल बिखराये, शरीर की सुधि भूलकर जहाँ-तहाँ घूमने लगी। कभी जंगलों में, कभी कूड़े-कचरों में, मरघटों में, खँड़हरों में, सड़कों पर, नदी के कछार आदि स्थानों में घूमती, दौड़ती, बैठ जाती और लेट जाती थी। इस तरह भूखे, प्यासे, नंगे, गंदे बदन तीन वर्षों तक मारी-मारी फिरती रही। एक दिन मिथिला में अपनी इसी अवस्था में जा रही थी कि वहाँ बुध भगवान् से इसकी भेंट हुई। भगवान् बुध की सौम्य आकृति तथा शान्त मुखमंडल को देखकर यह पगली चित्रवत् स्तब्ध हो गई और बुध के मुखमंडल को एकटक निहारने लगी। आनन्द के साथ भगवान् बुध भी खड़े हो गये और पगली की आँखों में अपनी आँखें डालकर ताकते रहे। थोड़ी देर बाद ही यह स्वस्थचित्त हो गई और इसका पागलपन दूर हो गया। इसने बुध के पैरों पर अपना माथा रख दिया। भगवान् बुध ने इसे बैठने को कहा और बैठने पर वहीं उन्होंने इसे उपदेश किया। उनके विमल उपदेशों से इसका सारा शोक जाता रहा और यह धम्म-साधिका बन गई। पीछे पबज्जित होकर संघ में सम्मिलित हुई और बाद में बुध की कृपा से परम ज्ञान की अधिकारिणी हुई।

खेमा मगधसम्राट बिम्बिसार की छोटी और सबसे प्यारी पत्नी थी। खेमा का सौन्दर्य आग में तपाये स्वर्ण-जैसा भास्वर था। यह साकल (स्यालकोट) के राजा की कन्या थी। बिम्बिसार के अमित प्यार ने इसके रुप के अभिमान को और भी ऊँचा चढ़ा दिया था। यह शरीर के सौन्दर्य को नारी के लिए सबसे बड़ा सौभाग्य समझती थी। इसलिए अपने रुप को निहारकर अपने ऊपर ईश्वर की बड़ी कृपा मानती थी। जब यह भिक्खुनी हो गई, तब एक बार कोसलराज प्रसेनजित् ने इससे ज्ञान की चर्चा की थी। खेमा के भिक्खुनी होने के पहले एक बार भगवान् बुध राजगृह में आकर बिम्बिसार के उद्यान में ही ठहरे। बिम्बिसार का सारा परिवार बुध के दर्शन के लिए गया; किन्तु खेमा नहीं गई। यह समझती थी कि समण गोतम शारीरिक सौन्दर्य तथा रुप-श्रृंगार को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं, जिसे मैं ईश्वर का वरदान मानती हूँ। अतः ऐसे व्यक्ति के पास मुझे नहीं जाना चाहिए। बिम्बिसार ने लाख बुध की महिमा का बखान किया; पर यह उनके दृर्शन के लिए नहीं गई। किन्तु बिम्बिसार का अमित प्यार इस पर था, वह चाहता था कि मेरी सबसे प्यारी पत्नी भगवान् बुध के दर्शन के सौभाग्य से वंचित न रहने पावे। वह राजा था, राजनीति और बुद्धि में पला था। उस दिन तो उसने चुप्पी साध ली; पर दो-चार दिनों बाद उसने खेमा से कहा– आज हमलोग उद्यान-विहार के लिए चलें? खेमा राजी हो गई। उद्यान-विहार के बहाने राजा ने खेमा को भगवान् बुध के सामने प्रस्तुत कर दिया। बिम्बिसार ने भगवान् बुध का अभिवादन किया, अतः खेमा को भी अभिवादन करना पड़ा। दोनों एक ओर बैठ गये। बुध ने अपने सिद्धिबल से खेमा के मन की बात जान ली। उसी समय भगवान् बुध ने अपने योगबल से ऐसी दो अप्सराओं को प्रकट किया, जिनके रुप-सौन्दर्य के आगे खेमा का रुप अत्यन्त नगण्य था। अप्सराओं के अमित सौंदर्य को देखकर खेमा की आँखें चौंधिया गई और उसे अपने सौंदर्य के ऊपर ग्लानि होने लगी। वे दोनों अप्सराएँ सेविका बनकर बुध के बायें-दाँयें खड़ी होकर पंखे झलने लगीं। थोड़ी देर बाद खेमा ने देखा कि विश्वमोहिनी दोनों अप्सराओं की जवानी ढ़ल गई और थोड़ी देर बाद उसने यह भी देखा कि वे दोनों अब बूढ़ी हो गई हैं। उनके मुख पोपले दीखने लगे हैं, उनके शरीर के चमड़े सिकुड़कर झूलने लगे हैं। उनके माथे के लम्बे-लम्बे काले केस, पककर सन हो गये और ठूंठ होकर झाड़ू बन गये हैं। उनके शरीर की शक्ति इतनी क्षीण हो गई कि उनके हाथों से पंखे छूटकर जमीन पर गिर गये। युवती और परमसुन्दरी अप्सराओं की ऐसी हालत देखकर खेमा काँपने लगी और उसी क्षण इसका सौंदर्यमद् जाता रहा। वह सोचने लगी– हाय जिस शारीरिक सौंदर्य पर मुझे इतना गर्व था, उसकी यही परिणति है। इस समय भगवान् बुध को अच्छा अवसर मिला। उन्होंने खेमा के हृदय की भावना जानकर अपना प्रवचन आरंभ कर दिया। उनके विमल उपदेशों से खेमा की आँख खुल गई और धम्म के प्रति इसकी आस्था पूरी जम गई। कुछ ही दिनों बाद उसने पबज्जा ले ली। किन्तु इसके बचपन तथा जवानी का संस्कार पूर्णतया भोग-विलास का था, अतः इसका मन अत्यन्त चंचल था। इसे अपनी वासनाओं को दमन करने में वर्षों भारी पराक्रम करना पड़ा। परन्तु धम्म-साधना में इसकी निष्ठा अटूट थी और इसने अपनी चित्तवृत्तियों का निरोध करके वासनाओं पर विजय प्राप्त कर ही ली। बाद में यह प्रसिद्ध भिक्खुनी हो गई।

विजया का भी जन्म राजगृह में हुआ था। यह एक उच्चकुल तथा वैभवसम्पन्न नागरिक की पुत्री थी। सुन्दरी, गुणवती और समवयस्क होने के कारण यह बिम्बिसार की पत्नी खेमा की सखी थी। इसने भी अपनी सखी खेमा का अनुगमन किया और भिक्खुनी हो गई।

वैभव-विलासपूर्ण जीवन होने के कारण इसका भी मन बहुत चंचल था। धम्म-साधना की अवस्था में ही यह विहार से निकलकर भाग जाती थी। ऐसी घटना एक ही बार नहीं; प्रत्युत तीन-चार बार घटी। अपने ऐसे मन को वश में करने के लिए और अपनी आन्तरिक दुर्बलता के विषय में इसने 'खेमा' से कहा और कल्याण का मार्ग पूछा। खेमा ने इसे धातु, आयतन, चार आर्य-सत्य, इन्द्रिय-बल, सात बोध्यंग और आष्टाँगिक मार्ग का विशद् उपदेश किया तथा दृढतापूर्वक इन सब पर आचरण करने को कहा। इसने खेमा के सत्संग से तथा उसके द्वारा बताये गये मार्ग का दृढतापूर्वक अवलम्बन करके अपने चंचल मन को वश में कर लिया। बाद में, इसके अन्तर का सारा अज्ञानांधकार दूर हो गया और इसने परम ज्ञान प्राप्त कर लिया।

चाला, उपचाला और सीसूपचाला ये तीनों सगी बहनें थीं। इनका जन्म मगध के 'नालक' गाम में हुआ था। ये पण्ड़ित-पुत्रियाँ थीं। इनका सबसे उल्लेखनीय परिचय यह है कि ये धम्मसेनापति 'सारिपुत्त' की बहने थीं। तीनों सारिपुत्त से छोटी थीं। इनमें बड़ी का नाम चाला, मंझली का उपचाला और छोटी का सीसूपचाला था। सारिपुत्त के द्वारा बुध-धम्म ग्रहण कर लेने पर इन्होंने सोचा कि जिस धम्म को मेरे भाई ने ग्रहण किया है, वह धम्म निश्चय ही महान् होगा। अतः, इन्होंने भी भाई का अनुगमन किया। चाला और उपचाला तो विवाहिता थीं, पर छोटी सीसूपचाला दीक्षित होने के समय कुमारी ही थी। तीनों का जीवन-वृत्तान्त समान ही है। इनकी आन्तरिक प्रेरणा की सच्चाई तथा संसार-त्याग की भावना की मात्रा अल्प थी, अतः परमज्ञान प्राप्त करने में बहुत समय लगा और इन्हें चित्तवृत्तियों का निरोध करने में काफी संघर्ष करना पड़ा। फिर भी इनका निश्चय दृढ था, और इन्होंने अकुसल कम्मों पर अन्त में विजय प्राप्त कर ही ली।

रोहिणी बेसाली निवासी अत्यन्त धनाढ्य पण्ड़ित कन्या थी। एक दिन इसे बेसाली में भगवान् बुध के धम्म का उपदेश सुनने का मौका मिला। उसी समय से इसके मन में धम्म के प्रति श्रद्धा जागरित हुई। इसके बाद तो इसकी श्रद्धा ऐसी उन्नत हुई कि रात-दिन बुध-भिक्खुओं का ही गुणगान करती रहती थी। यहाँ तक कि रात में गाढ़ी निद्रा में सोये अपने पिता को जगा देती और कहने लगती– 'पिताजी, इन बुध समणों को देखो तो!' इतना ही नहीं, यह स्वप्नावस्था में बड़बड़ाने लगती– "अहो! ये समण!" अपने पिता से हठपूर्वक बुध-समण-संघ को प्रचुर दान दिलवाया करती थी। अपनी पुत्री की ऐसी हालत देखकर इसका पिता, जो अन्यान्य मत का माननेवाला था, सदा चिन्तित रहता था। एक दिन बाप ने बेटी को बड़े प्यार से समीप बैठाकर कहा- रोहिणी, क्या तू समण होना चाहती है? अरी, ये बुध-भिक्खुजन तो जरा भी श्रम नहीं करते। ये आलसी, कर्मरहित और लोभी हैं, दूसरे के दिये अन्न पर जीनेवाले हैं। स्वादिष्ठ भोजन के ही चक्कर में रात-दिन रहते हैं। ऐसे लालची और अकर्मण्य समणों के फेर में तू कैसे पड़ गई? रोहिणी ने अपने पिता को उत्तर दिया– "नहीं पिता जी! ये समण श्रमशील हैं, आलसी नहीं। ये अप्रमादी हैं, साथ ही उच्चकर्मी और तृष्णाहीन हैं। किसी के साथ भी इनका न राग है, न द्वेष ही। ऐसे समणों की आराधना मैं क्यों न करूँ!" इसके अतिरिक्त भी इसने बुध-समणों के गुणों का बखान किया। बाप अपनी बेटी की निष्ठापूर्वक बुध से भक्ति और सुमार्ग पर ले जानेवाली भावना से ऐसा प्रभावित हुआ कि इसके साथ ही उसने भी बुध-धम्म ग्रहण कर लिया।

चापा का पिता बहेलियों का सरदार था और बंकहार प्रदेश (दक्षिणी शाहाबाद) का रहनेवाला था। 'उपक' नामक आजीवक, जो भगवान् बुध से उस समय मिला था, जब वे धम्म-चक्क-पबत्तन करने बुधगया से सारनाथ जा रहे थे। उपक, बुध से मिलने के बाद, बंकहार में गया और बहेलियों के सरदार के द्वार पर पहुँचा। सरदार शिकार में कहीं गया था। उसकी लड़की 'चापा' ने ही अभ्यागत उपक का स्वागत-सत्कार किया। चापा का रुप देखकर उपक मोहित हो गया और उसने वहीं प्रतिज्ञा कर ली कि जबतक इससे मेरा ब्याह नहीं होगा, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। व्याध्र-सरदार जब आया, तब उसे सारी बात मालूम हुई। उसने उपक सन्यासी को बहुत समझाया कि साधु बाबा, आप तो संसार त्यागी हैं, इस शादी-ब्याह की झंझट में क्यों फँसते हैं? पर उपक ने कुछ नहीं सुना। वह अपने हठ पर अड़ा रहा, तब व्याध्र-सरदार ने कहा– "तुम तो कुछ शिल्प जानते नहीं, गृहस्थी कैसे चलाओगे, ऐसे श्रमहीन को मैं अपनी पुत्री कैसे दे सकता हूँ?" इसपर उपक ने कहा– "जिन पशु-पक्षियों को तुम मारकर लाते हो, उन्हें मैं बाजार में ले जाकर बेच आऊंगा, हमलोगों की ठाट से गृहस्थी चलेगी! अन्त में लाचार होकर व्याध्र-सरदार ने इसे अपनी कन्या दे दी। बाद में चापा के गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'सुभद्द' पड़ा। चापा को यह बराबर खलता था कि मेरा पति धर्म से भ्रष्ट होकर मांस बेचने का काम करता है। वह अपने नन्हें पुत्र को रोने से जब चुप कराती, तब ताना मारकर कहती-सन्यासी के पुत, चुप हो जा! व्याध्र के पुत, चुप हो जा! अपनी पत्नी के द्वारा बार-बार ऐसा सुनकर उपक के मन में बड़ी ग्लानि हुईं। उसने सोचा– बुध से मेरी भेंट हुई थी, वे मेरे पुराने परिचित हैं। वे सचमुच अब बड़े सिद्ध पुरुष हो गये हैं। मैं उन्हीं की सरण में जाऊँगा!! उसने अपनी पत्नी से अपना निश्चय कहा। पीछे तो चापा ने बहुत प्रयास किया कि मेरा पति भिक्खु न हो; पर उसकी एक न सुनने पर चापा ने भी निश्चय कर लिया कि मैं भी पति का अनुगमन करूँगी और भिक्खुनी हो जाऊँगी। उपक निरंजना नदी के तीर पर भगवान् बुध से (दूसरे मतानुसार सावत्थि में) जाकर मिला

और बुध-भिक्खु हो गया। बुध ने अपने परिचित सन्यासी को देखकर कहा– "इतने दिन तक कहाँ थे?" और बड़े प्यार से उसे उन्होंने पबज्जित किया। पति द्वारा बुध-धम्म ग्रहण कर लेने पर चापा भी अपने पुत को उसकी दादी के हवाले करके धम्मग्रहण करने चली गई और भिक्खुनी हो गई। यह भी एक प्रसिद्ध भिक्खुनी हुई, जिसकी गाथा "थेरी-गाथा" में संगृहीत है।

कंजंगला 'कंजंगल" (संताल परगना) प्रदेश की रहनेवाली भिक्खुनी थी। जब भगवान् बुध के धम्म का विस्तार हुआ, तब इसकी अवस्था बिल्कुल ढल गई थी। यह बुध-धम्म की पण्ड़िता थी। यह विधिवत् बुध-विद्यार्थियों को धम्म का उपदेश करती थी। एक बार इसने बुध के एक धम्म से लेकर दस धम्मों' तक की विशद व्याख्या-सहित शिक्षा देकर उसके तथ्य की जानकारी के लिए उन विद्यार्थियों को बुध के पास भेजा था। उस समय बुव कंजंगल में ही विहार करते थे। बुध ने उनकी पंडिताई को सराहा था।

सुभा राजगृह-निवासी एक सुवर्णकार सेट्ठी की कन्या थी। शरीर की सुन्दरता के कारण ही इसका नाम सुभा पड़ा था। देश के बड़े-से-बड़े सेट्ठी इसके रूप पर मुग्ध होकर इसे अपनी पत्नी बनाना चाहते थे। एक दिन नगर की अन्य स्त्रियों के साथ सुभा भगवान् बुध का उपदेश सुनने राजगृह के एक विहार में गई। उस दिन के बुधोपदेश का इस पर अत्यंत गहरा असर पड़ा और नियमित रूप से उसके बाद यह उपदेश सुनने लगी। कई दिनों के धम्म-श्रवण से इसका चित्त 'स्त्रोतापन्नफल' में प्रतिष्ठित हो गया। उसके बाद यह महापजापति गोतमी के पास चली गई और वहीं उसके द्वारा बताये गये उद्योगों के अनुसार धम्म-साधना करने लगी। बाद में, इसने विधिवत् गोतमी से पबज्जा ले ली। जब यह घर से निकलकर गोतमी के पास गई, तब इसके परिवारवाले और जाति-बिरादरी के और लोग भी इसे समझाने तथा घर लौटा लाने के लिए 'भिक्खुनी-संघ' में गये किन्तु, इसने अपने जाति-बिरादरीवालों को ऐसा फटकारा की वे उलटे पाँव लौट आये। संघ में अन्य कई भिक्खुनियों से इसका धम्म-ज्ञान बहुत ऊँचा था। यह जहाँ भी उपदेश करती थी, सांसारिक भोगों और सुखों की धज्जियाँ उड़ाकर छोड़ देती थी।

सुभा (द्वितीय) का भी जन्म राजगृह नगर में ही हुआ था; पर यह एक घनाढ्य पण्ड़ित की कन्या थी। इसका भी 'सुभा' नाम इसके भास्वर रुप के चलते ही पड़ा था। इसका भी मन उपदेशों को सुनते-सुनते धम्म-भावना की ओर झुका था। इसने भी गोतमी से पबज्जा ली। इसी के साथ एक लम्पट युवक ने बलात्कार करना चाहा था, जिसके हाथ पर इसने अपनी आँखें ही निकालकर रख दी थी। यह अंधी होकर लहूलुहान मुखमंडल लिये बुध के सामने गई। करुणा-वत्सल बुध ने अपने योगबल से इसकी आँखों को ठीक करके इसकी आकृति पूर्ववत् कर दी थी। बुध ने धम्म में इसकी ऐसी निष्ठा जानकर, ज्ञान में अधिक उन्नति करने के लिए एक विशेष ध्यान का इसे उपदेश किया था। इस ध्यान का विशिष्ट आचरण करके इसने योग और ज्ञान-मार्ग में परम उन्नति की थी।

सच्चा, लोला, अपवादिका और पटाचारा चारों सगी बहने थीं। इनके भाई का नाम सच्चक था। ये बेसाली की रहनेवाली थीं। इनके सम्बन्ध में पहले ही कहा गया है। "विनय" जाननेवाली भिक्खुनियों में पटाचारा का स्थान मुकुटमणि-सा था।

अम्बपाली की कथा बहुत प्रसिद्ध है, इसने भी अपनी ढलती आयु में बुध-धम्म स्वीकार किया था। बुध के जीवन में बिहार-प्रदेश की यह शायद अन्तिम नारी थी, जिसने भिक्खुनी का जीवन अपनाया था। इसका जन्म तो एक उच्चकुल में हुआ था, पर अवैध रूप से जन्म लेने के कारण इसकी माता ने एक आम के बगीचे में इसे फेंक दिया था। यह माली के द्वारा पाली गई और आम्ब-वन में मिली, इसलिए इसका नाम अम्बपाली पड़ा था। जब यह युवती हुई, तब इसे पत्नी बनाने के लिए लिच्छवि-कुमारों में होड़ लगी थी। अन्त में इसे नगर-वधू का पेशा अपनाना पड़ा। बज्जि-संघ को परस्पर लड़कर नष्ट हो जाने से बचाये रखने के लिए इसने "नगर-वधू" का कर्म स्वीकार किया था। बेसाली नगर को जिन वस्तुओं के कारण गर्व था, उनमें एक अम्बपाली गणिका भी थी। अम्बपाली के ऊपर मगध-सम्राट बिम्बिसार भी आसक्त था। भगवान् बुध अन्तिम बार जब बेसाली गये, तब इसी के बगीचे में ठहरे और अपने संघ के साथ इसके घर जाकर भोजन किया था। उसके बाद ही इसने बुध-धम्म स्वीकार किया। अम्बपाली का एक पुत्र भी था, जिसका नाम "विमल कोण्ड़िन्य" था, वह अम्बपाली से पहले ही बुध-धम्म स्वीकार कर भिक्खु हो गया था। लड़के के प्रेम के कारण ही बुध-धम्म में इसकी श्रद्धा जगी थी। "थेरीगाथा" में जो गाथा इसके उद्गार के रूप में अंकित है, विश्व की गेय गाथाओं में काव्य की दृष्टि से उसका स्थान उच्च है। शान्तरस का परिपाक इस गाथा में जैसा है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।

सिंहलद्वीप में भिक्खुनी-संघ

धम्मराज सम्राट असोक द्वारा पाटलिपुत्र में आयोजित तृतीय बौद्ध-संगीति के उपरान्त थेर महिन्द को बत्तीस वर्ष की आयु में धम्म-प्रचार के लिये सिंहलद्वीप भेजा गया। उस देश के राजा तिस्स बुध-विद्या से पबज्जित महिन्द के सुन्दर स्वरुप को देखकर विस्मृत हो उठे। उन्होंने बहुत ही श्रद्धा और सत्कार पूर्वक राजकुमार महिन्द को अपने यहाँ रक्खा। सिंहलद्वीप में सहस्त्रों स्त्री-पुरुष महिन्द के उपदेश को सुनकर बुध-धम्म ग्रहण करने लगें। थोड़े ही दिनों के बाद सिंहल की राजकुमारी अनुला ने पाँच सौ सखियों के साथ भिक्खुनी-व्रत लेने का संकल्प किया, उस समय थेर महिन्द के मन में आया कि इन सब स्त्रियों को अच्छी तरह धम्म की शिक्षा देने तथा स्त्रियों में धम्म प्रचार करने के लिये एक शिक्षिता और धम्मसीला भिक्खुनी की अत्यन्त आवश्कता है। क्योंकि बुध-संघ में महिला उपासिकाओं को भिक्खुनी-संघ में सम्मिलित करने के लिए 5 वरिष्ठ भिक्खुनियों की उपस्थिति अनिवार्य होती है। इसलिये उसने अपनी बहिन संघमित्ता को सिंहल भेजने के लिये अपने पिता देवांपिय धम्मराज सम्राट असोक महान् के पास संदेश भिजवाया। राजकुमारी संघमित्ता को तो धम्म के सिवा किसी दूसरी पार्थिव वस्तु की चाहना थी नहीं। उसने जब सुना कि धम्मप्रचार के लिये उसे अपने भाई महिन्द के पास सिंहलद्वीप जाना है तो उसके ह्रदय में आनन्द न समाया। पुण्यसीला संघमित्ता ने धम्मप्रचार के लिये बोधिवृक्ष का उपहार लेकर सिंहल-द्वीप को प्रस्थान किया। जम्बूद्वीप के इतिहास में यह पहला ही अवसर था; जब एक महामहिमशाली सम्राट की कन्या ने सुन्दर शिक्षा-दीक्षा तथा धम्मानुष्ठान के द्वारा जीवन की पूर्णता को पूरा कर दूर देश की नारियों को अज्ञानान्धकार से मुक्त करने के लिये पाटलिपुत्र से प्रयाण किया। उस समय जम्बूद्वीप में संघमित्ता के इस धम्म-प्रयाण के समाचार से लोगों के ह्रदय में उसके प्रति कैसी उदार भावना का उदय हुआ होगा, इसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती है। संघमित्ता जब सिंहल पहुँची तो उसकी तेजस्विनी मुख-मुद्रा, तपस्विनी का वेष तथा अपूर्व धम्मभावना देखकर वहाँ के स्त्री-पुरुष चित्रलिखित से हो गये। संघमित्ता ने वहाँ एक भिक्खुनी-संघ स्थापित किया और अपने भाई महिन्द के साथ उसने सिंहलद्वीप के घर-घर में बुध-धम्म की वह अमर ज्योत जलायी, जिसके प्रकाश में आज ढाई हजार वर्ष बीतने पर भी सिंहल निवासी नर-नारी अपनी जीवन-यात्रा व्यतीत करते हैं और भगवान् तथागत उनके उपदिष्ट धम्म और संघ की शरण में जयघोष करते हैं। महावंस नामक बुध-ग्रन्थ में संघमित्ता का उल्लेख मिलता है। महावंस का लेखक लिखता है कि 'संघमित्ता' ने पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया था। सिंहल में रहते समय धम्म की उचित व्याख्या के लिये उसने बहुतेरे पुण्य कार्य किये थे। सिंहल के राजा ने बड़े ही आदर-सत्कार तथा ठाठ-बाट से उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया की थी। जो भी हो, इस पवित्र जम्बूद्वीप में एक-से-एक बढ़कर आदर्श जीवनयापन करने वाली नारियाँ हुई हैं; परन्तु संघमित्ता का काम धम्मराज सम्राट असोक महान् की कन्या के अनुरुप ही था। सम्राट को इतिहासकारों ने 'महान्' पदवी से विभूषित किया। परन्तु देवी संघमित्ता की महानता उससे कहीं बड़ी थी, सिंहल का इतिहास इसका साक्षी है। अपने महाराजाधिराज असोक महान् की कन्या देवी संघमित्ता के पवित्र और उन्नत जीवन का स्मरण करके आज भी हमारा सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

निष्कर्ष

एक तरफ तो धर्मानंद कौसाम्बी भारत में चौथी शताब्दी में भिक्खुनी-संघ के ह्रास का जिक्र करते हैं, वहीं 7वीं शताब्दी में चीनी बौद्ध तीर्थयात्री ह्वेनसांग जब भारत तीर्थयात्रा को आते हैं तब भी उन्हें कई स्थानों पर भिक्खुनी-संघ और विहारों के दर्शन होते हैं, जिनका उल्लेख वो अपने यात्रा-वृत्तान्त में बखूबी करते हैं। वैश्विक स्त्री समाज को- भिक्खुनी-संघ, महामानव बुध और बुध-धम्म का एक अनमोल उपहार है जिसकी महत्ता सूर्य के प्रकाश की तरह कथमपि कमतर नहीं होने वाली है। सास्ता बुध ने केवल स्त्री और पुरुष के अन्तर को हीं नहीं बल्कि महारानी और मेहतररानी (सफाईकर्मी) के अन्तर को भी मिटाने का सफल का प्रयास किया था। भिक्खुनी-संघ में किसी प्रकार का भेदभाव की भावना उत्पन्न न हो, इसलिए तथागत बुध ने महापजापती गोतमी एवम् यसोधरा जैसी महारानियों और प्रकृति जैसी मेहतररानियों (चाण्ड़ाल कन्या) को संघ में पबज्जा देने के उपरान्त एक ही पंक्ति में बिठा दिया था।

आभार

विद्या-अध्ययन और मानसिक व सामाजिक चेतना की परम अवस्था प्राप्त करवाने के लिए लोकतंत्र रक्षक सम्मान से सम्मानित पूज्य बाबूजी सतीश चन्द्र साह जी को मैं यह शोध-पत्र समर्पित करता हूँ। जिन्होंने अपने जीवनकाल में भी सामाजिक सद्भावना और लैंगिक समानता को सर्वोपरि रखा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. आम्बेड़कर, बोधिसत्व बाबासाहेब भीमराव. (2016). भगवान बुद्ध और उनका धम्म. सम्यक प्रकाशन.
2. बापट, पुरुषोत्तम विश्वनाथ. (2010). बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.
3. बनर्जी, पी. (1985). भारतीय वास्तुकला: इस्लामिक काल. पब्लिकेशंस डिवीजन।
4. भागवत, एन. के. (1956). थेरी गाथा. बॉम्बे विश्वविद्यालय प्रकाशन.
5. Collett, A. (2014). Women in Early Indian Buddhism. Oxford University Press.
6. डॉ. धर्मवीर. (2005). थेरीगाथा की स्त्रियाँ और डॉ. अंबेडकर. वाणी प्रकाशन.
7. द्विवेदी, पण्ड़ित गौरीशंकर. (1948). कल्याण नारी अंक विशेषांक 22 वाँ वर्ष. गीताप्रेस.
8. Houlton, S. J. (1949). Bihar The Heart of India. Orient Longmans Ltd.
9. कास्यप, भिक्खु जगदीस. (1959). थेरीगाथापालि. पाली प्रकाशन मण्ड़ल.
10. कौसल्यायन, भदन्त आनन्द. (1941). जातक प्रथम खण्ड़. हिन्दी साहित्य सम्मेलन.
11. Law, B. C. (1927). Women in Buddhist Literature. Asian Educational Services.
12. मालविका, कुमारी विद्यावती. (1950). आदर्श बौद्ध महिलाऐं. भारतीय महाबोधि सभा.
13. मारग्रेट मैक्निकोल. (1923). पोएम्स बाई इण्ड़ियन वूमेन. एसोसिएशन प्रेस वाईएमसीए.
14. निर्भय, धीरज कु. 'दसानन'. (2023). प्राचीन बौद्ध साहित्य और भिख्खुनी संघ. INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY, 1(1), 01-06.
15. सांकृत्यायन, महापण्ड़ित राहुल. (2022). विनय पिटक. सम्यक प्रकाशन.
16. सराओ, प्रो. करमतेज सिंह. (2004). प्राचीन भारतीय बौद्ध धर्म. हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय.
17. सस्ता साहित्य मंडल. (1992). भारत के स्त्री-रत्न भाग 3. सस्ता साहित्य मंड़ल.
18. त्रिपाठी, श्रीहवलदार 'सहृदय'. (1960). बौद्ध धर्म और बिहार. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्.
19. उपाध्याय, भरत सिंह. (1950). थेरी गाथाएं. सस्ता साहित्य मंड़ल.
20. उपाध्याय, आचार्य बलदेव. (2017). बौद्ध दर्शन मीमांसा. चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन.6